Date 14.5.20

DII (Hons) Paper III

Lecture No – 32

Dr. Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga

Topic – Psychological Assessment of Psycho-Pathology.

असामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें असामान्य व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। असामान्य शब्द को परिभाषित करने से सम्बन्धित कठिनाइयों के कारण बहुत सारे मनोवैज्ञानिक इसके स्थान पर मनोरोगविज्ञान (Psychopathology) शब्द का उपयोग करना अधिक उपयुक्त मानते हैं। इस दृष्टिकोण से वर्तमान समय में मनोरोगविज्ञान तथा असामान्य मनोविज्ञान को पर्यायवाची शब्द (synonymous terms) माना जाता है।

Meaning of Psychological Assessment of Psychopathology :– मनोरोगविज्ञान के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन का तात्पर्य मानसिक विकृतियों अथवा असामान्य व्यवहारों के मूल्यांकन से है। अर्थात् मूल्यांकन का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि असामान्यता साधारण है अथवा गंभीर, असामान्य व्यवहार सामान्य व्यवहार से कितनी मात्रा में विचलित है। इन दोनों तरह के व्यवहारों के बीच केवल मात्रा का अन्तर है अथवा मात्रा तथा गुण दोनों का।

मूल्यांकन अध्ययन (Assessment Studies) :– मूल्यांकन अध्ययन का उद्देश्य है किसी समस्या विशेष

Date

में होनेवाले व्यवहार का वस्तुनिष्ठ विवरण देना।

मूल्यांकन केवल मापन उपकरण (measuring tool) नहीं है, बल्कि यह व्यवहार के निरीक्षण (observation) तथा व्याख्या (interpretation) का एक सामान्य उपागम (general approach) है।

मूल्यांकन प्रदत्त (Assessment data) का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जा सकता है:—

1) इनका उपयोग भविष्य में होनेवाले व्यवहार की भविष्यवाणी के लिए किया जा सकता है।

2) वर्तमान में होनेवाले व्यवहार के कारकों (correlates) की पहचान के लिए किया जा सकता है।

3) चिकित्सा प्रक्रियाओं (Therapeutic procedures) के प्रति सकारात्मक ~~प्रक्रिया~~ प्रतिक्रिया (Positive reaction) की संभावना को मापने के लिये किया जा सकता है।

Types of Assessment (मूल्यांकन के प्रकार)

① व्यवहार मूल्यांकन (Behaviour Assessment):— व्यवहार चिकित्सा आन्दोलन (behaviour therapy movement) के परिणामस्वरूप व्यवहार मूल्यांकन का विकास सम्भव हुआ। इसका उपयोग प्रायः ऐसे प्रतिक्रिया अभाव (Response deficits) की पहचान करने के लिये किया जाता है।

2) संज्ञानात्मक मूल्यांकन (Cognitive Assessment):— संज्ञानात्मक मूल्यांकन से अप्रत्यक्ष या ~~पुनरावृत्ति~~ उपस्थित व्यवहार से पूर्व घटित विचारों तथा साथ-साथ चलने वाले विचारों के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त होती है। इससे उन Procedures के प्रभावों के सम्बन्ध में भी सूचना मिलती है, जिनका लक्ष्य होता है व्यक्ति के सोचने तथा व्यवहार करने के तरीके को

Notes परिमार्जित करना।

3) संज्ञानात्मक मूल्यांकन (Cognitive Assessment) :— संज्ञानात्मक मूल्यांकन से असामान्य या कुसमायोजित व्यवहार से जुड़े विचारों तथा साथ-साथ चलने वाले विचारों के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त होती है। परन्तु संज्ञानात्मक मूल्यांकन का अर्थ किसी असामान्य या कुसमायोजित व्यवहार का आकलन किसी विशेष परिस्थिति के सन्दर्भ में करना।

4) दैहिक मूल्यांकन (Bodily Assessment) :— दैहिक मूल्यांकन का अर्थ है शरीर के कार्यों के माध्यम से रोगी (client) के भावों, संवेगों, तथा प्रेरकों को समझना।

नैदानिक विधियां एवं परीक्षण
(Diagnostic methods and Tests)

1) निरीक्षण विधि- (Observation Method)
2) व्यक्ति इतिहास विधि- (case history method)
3) मनोविश्लेषण विधि- (Psycho-analytic method)
4) साक्षात्कार विधि- (Interview method)
5) सहसम्बन्धात्मक विधि- (Correlational method)
6) प्रयोगात्मक विधि (Experimental method)

इनसबों को Interview method के बारे में जानना है। साक्षात्कार विधि-

(Interview method)

असामान्य व्यवहार या मनोरोगात्मक विकृतियों (Psychopathic disorders) के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण उपकरण साक्षात्कार है इसे नैदानिक साक्षात्कार (clinical diagnostic interview) कहते हैं। साक्षात्कार में दो व्यक्ति होते हैं, जिन्हें साक्षात्कारकर्ता (interviewer) तथा साक्षात्कार देने वाला (interviewee)

Date

कहते हैं। साक्षात्कारकर्ता की भूमिका में चिकित्सक होता है तथा साक्षात्कार देनेवाले की भूमिका में सेवार्थी (client) या रोगी होता है। चिकित्सक अपने सेवार्थी से आवश्यक प्रश्न पूछता है और सेवार्थी द्वारा दिए गए उत्तरों से आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करता है। इन सूचनाओं के आलोक में client का निदान (diagnosis), पूर्वानुमान (Prognosis) एवं उपचार (treatment) करना सम्भव होता है।

नैदानिक साक्षात्कार के चार संघटक (Components) हैं जिन्हें रागात्मक सम्बन्ध (Rapport), प्रविधि (technique) मानसिक स्थिति (Mental state) तथा निदान (diagnosis) कहते हैं। रागात्मक सम्बन्ध का अर्थ यह है कि सबसे पहले Interviewer अपने client के साथ संवेगात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है, जिससे client अपने चिकित्सक (Interviewer) के साथ सहज रूप से बातचीत करने लगता है। प्रविधि का अर्थ यह है कि Interviewer अपने client के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अनुकूल प्रविधियों का उपयोग करता है। मानसिक स्थिति का अर्थ यह है कि साक्षात्कारकर्ता अपने सेवार्थी के मानसिक स्तर को निर्धारित करता है, जिससे पता चलता है कि client किस मानसिक स्तर में कार्यरत है। निदान का अर्थ यह है कि Interviewer अपने client की समस्याओं का बार-बार संशोधन (Revision) करता है।

गुण (Merits)

इस विधि के कई गुण हैं:

1) असामान्य मनोविज्ञान की एक विधि के रूप में Interview का एक गुण यह है कि इसके द्वारा व्यक्ति का गहन अध्ययन सम्भव होता है।

2) साक्षात्कार का एक गुण यह भी है कि इसके द्वारा व्यक्ति के

शारीरिक हाव-भाव, व्यवहार के ढंग आदि अशाब्दिक संकेतों से लाभ उठाने की भी अवसर मिलता है।

3) आवश्यकता के अनुसार वैयक्तिक साक्षात्कार, समूह साक्षात्कार, संरचित साक्षात्कार, असंरचित साक्षात्कार आदि का उपयोग करके मूल्यांकन करना सम्भव होता है।

अवगुण (Demerits)

1) साक्षात्कार के माध्यम से गम्भीर मानसिक विकृति वाले रोगी के सम्बन्ध में सही सूचनाएं प्राप्त करना सम्भव नहीं है।

2) इस विधि का एक दोष यह भी है कि Interview के समय एक नया वातावरण रहता है। इसलिए कभी-कभी Interview देने वाला व्यक्ति का अधिकार हो जाता है और Interviewer के प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाता है।

3) यह विधि वास्तव में आत्मनिष्ठ विधि (Subjective method) है। इसलिए साक्षात्कार देने वाला कभी-कभी किसी प्रश्न का गलत उत्तर जान-बूझकर देता है, जिससे सही सूचना नहीं मिल पाती है।

4) साक्षात्कार के समय साक्षात्कारकर्ता के निर्णय पर उसके व्यक्तिगत पक्षपातों (biases) का प्रभाव पड़ सकता है। ऐसी हालत में सही मूल्यांकन सम्भव नहीं होता है।

उपर्युक्त त्रुटियों के कारण साक्षात्कार का उपयोग मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (Psychological assessment) में एक सहायक उपकरण के रूप में ही किया जाता है।

कुमारी कविता
मनोविज्ञान विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा